ज़हरे इश्क़

ज़हरे इश्क़

शौक़ लखनवी

अदबी पब्लिशर्स

पब्लिशर्स :
अदबी पब्लिशर्स,
८ शेफर्ड रोड,
बम्बई नं. ८

पहली बार
दिसम्बर १९५६

प्रिंटर्स :
अदबी प्रिंटिंग प्रेस,
८ शेफर्ड रोड,
बम्बई नं. ८

'ज़हरे-इश्क़' एक मशहूर कविता है। इसकी कहानी हमारी ही दुनिया की कहानी है। इस में भूत, प्रेत, परियाँ और उड़नखटोले नहीं हैं बल्कि गोश्त-पोस्त के इंसान हैं। और ये इंसान देवी देवताओं की तरह नहीं हैं। इन में अच्छाइयाँ भी हैं और कमज़ोरियाँ भी। इस कहानी में जो कुछ कहा गया है वह सच्चा क़िस्सा नहीं है। लेकिन ऐसी बातें ज़रूर हैं जो आये दिन हमारे सामने होती रहती हैं।

इसका प्लाट बहुत सादा है और ज़बान बड़ी हल्की फुल्की है। यह लखनऊ की टकसाली ज़बान का एक बहुत अच्छा नमूना है। इस कविता की एक और अच्छाई यह है कि यह कुछ ऐसे अन्दाज़ में लिखी गयी है कि इसे पढ़कर दिल पर बड़ा असर होता है।

इस कविता के लिखने वाले लखनऊ के एक मशहूर हकीम तसद्दुक़ हुसैन "**शौक़**" थे जिन्हें आम तौर पर "**शौक़**" लखनवी के नाम से याद किया जाता है। इनकी और भी कई कविताएं हैं और सभी अपनी जगह पर अच्छी हैं लेकिन जिस कविता की वजह से इनका नाम शायरी की तारीख में यादगार रहेगा, वह यही "**ज़हरे इश्क़**" है।

पब्लिशर्स

हम्द

लिख क़लम पहले हम्दे रब्बे वदूद ।
कि हर एक जा पे है वही मौजूद ॥

जाते माबूद जावेदानी है ।
बाक़ी जो कुछ कि है वह फ़ानी है ॥

हमसर उसका नहीं, नदीम नहीं ।
सब हैं हादिस कोई क़दीम नहीं ॥

हुस्न व इश्क़ का बयान

है बना जब से गुलशने ईजाद
हुइ हर शै हर एक को इमदाद ॥

हुस्नो ख़ूबी अता किया गुल को।
नालओ दर्द बख़्शा बुलबुल को ॥

माह को नूर, लुत्फ़ हाले को।
चश्म नर्गिस को, दाग़ लाले को ॥

रास्ती की अता सनोबर को।
पेच सुंबुल को, आब गौहर को ॥

सख़्ती सारी बुतों के दिल में दी ।
उल्फ़त इनसां के आबो–गिल में दी ॥

इश्क़ से कौन है बशर ख़ाली ।
कर दिये जिसने घर के घर ख़ाली ॥

पड़ते हैं इस में जान के लाले ।
डालता है जिगर में यह छाले ॥

जो कि वाक़िफ़ थे सब क़रीनों से ।
ख़ाक छनवाई उन हसीनों से ॥

इन से उम्मीद रखना है बेजा ।
भाई मजनूं से क्या सलूक किया ॥

मुँह से करने न दी फ़ुगां उसने ।
मारे चुनचुन के नौजवां उस ने ॥

इससे जिस ने ज़रा तपाक किया ।
सब से पहले उसे हलाक किया ॥

आतिशे हिज्र से जलाता है ।
आग पानी में यह लगाता है ॥

मार डाला तमाशबीनों को ।
जहर खिलवा दिया हसीनों को ॥

बस में डाले न किबरिया इसके ।
रहम दिल में नहीं जगा इस के ॥

आगाजे दास्तान

एक क़िस्सा अजीब लिखता हूँ ।
दास्ताने ग़रीब लिखता हूँ ॥

ताज़ा इस तरह की हिकायत है ।
सुनने वालों को जिस से हैरत है ॥

जिस मुहल्ले में था हमारा घर ।
वहीं रहता था एक सौदागर ॥

मर्दे अशराफ़ो साहबे दौलत ।
ताजिरों में कमाल की इज्ज़त ॥

ग़म न था कुछ फ़राग़ बाला से ।
था बहुत ख़ानदाने आली से ॥

एक दुख़्तर थी उसकी माहजबीं ।
शादी उसकी नहीं हुई थी कहीं ॥

सानी रुख़्वर्ती न थी वह सूरत में ।
ग़ैरते हूर थी हक़ीक़त में ॥

सब्ज़ नख़्ले गिल जवानी था ।
हुस्ने यूसुफ़ फ़क़त कहानी था ॥

इस सिनो साल पर कमाल ख़लीक़ ।
चाल ढाल इन्तेहा की नसतालीक़ ॥

चश्मे बद्दूर वह हसीं आँखें ।
रश्के चश्मे ग़ज़ाले चीं आँखें ॥

था जो माँ बाप को नजर का डर ।
आँख भर कर न देखते थे उधर ॥

थी ज़माने में बे अदील नज़ीर ।
ख़ुश गुलू, ख़ुश जमाल, ख़ुश तक़रीर ॥

था न उस शहर मे जवाब उसका ।
हुस्न लाखों में इन्तेख़ाब उसका ॥

शेर—गोई से जौक़ रहता था ।
लिखने पढ़ने से शौक़ रहता था ॥

रुख़ पे गेसू की लहर आफ़त थी ।
जो अदा उसकी थी क़यामत थी ॥

था यह उस गुल का जामाजेब बदन ।
सादी पौशाक में थे सौ जोबन ॥

सारा घर उस पे रहता था क़ुरबाँ ।
रूह गर माँ की थी, तो बाप की जां ॥

नूर आँखों का, दिल का चैन थी वह ।
रहते जाने वाल्दैन थी वह ॥

पहला आमना सामना

एक दिन चर्ख़ पर जो अब्र आया ।
कुछ अंधेरा सा हर तरफ़ छाया ॥

खुल गया जब बरस के वह बादल ।
क़ौस तब आसमां पे आई निकल ॥

दिल मेरा बैठे बैठे घबराया ।
सैर करने को बाम पर आया ॥

ख़फ़क़ान दिल का मेरे बहलने लगा ।
इस तरफ़ उस तरफ़ टहलने लगा ॥

देखा एक सिम्त जब उठा के नजर ।
सामने थी वह दुख्ते सौदागर ॥

साथ हमजोलियां भी थीं दो चार ।
देखती थीं वह आसमां की बहार ॥

बाम से कुछ उतरती जाती थीं ।
चुहलें आपस में करती जाती थीं ॥

रह गई जब अकेली वह गुलरू ।
निगरां मैर को हुई हर सू ॥

हुई मेरी जो उसकी चार निगाह ।
मुंह से बे साख्ता निकल गई आह ॥

हाल दिल का कहा नहीं जाता ।
ख्रूब संभला, नहीं गश आ जाता ॥

न हुआ गो कलाम फी माबैन ।
रूह क़ालिब में हो गई बेचैन ॥

तीरे उल्फ़त जो था लगा कारी ।
अश्क बे साख्ता हुये जारी ॥

सामने वह खड़ी थी माहे मुनीर ।
चुप खड़ा था मैं सूरते तस्वीर ॥

ताबे नज्ज़ारा इतनी ला न सका ।
कि इशारे से भी बुला न सका ॥

देखता उसको बार बार था मैं ।
महवे हुस्ने जमाले यार था मैं ॥

गो मैं रोके हुये हज़ार रहा ।
दिल पे लेकिन न इख्तियार रहा ॥

इसी सूरत से हो गई जब शाम ।
लाई पास उसके एक कनीज़ पयाम ॥

बैठी नाहक़ भी हौले खाती हैं ।
अम्माजान आपको बुलाती हैं ॥

गेसू रुख़ पर हवा से हिलते हैं ।
चलिये अब दोनों वक़्त मिलते हैं ॥

सुन के लौंडी के मुंह से यह पैग़ाम ।
गई कोठे के नीचे वह गुलफ़ाम ॥

उसका जलवा न जब नज़र आया।
मैं भी रोता हुआ उतर आया ॥

शाम से फिर, सहर की मरमर के।
शब वह काटी ख़ुदा ख़ुदा करके ॥

आशिक़ की बेताबी

पड़ गया दिल में ग़म से एक नासूर ।
यही उस दिन से पड़ गया दस्तूर ॥

दिन में सौ बार बाम पर जाना ।
देखना भालना चले आना ॥

जब न देखा वहां पे वह गुलरू ।
फ़र्ते ग़म से निकल पड़े आंसू ॥

लाख चाहा न हो सका दिल सख़्त ।
पये तसकीं हुई यह आमदो रफ़्त ॥

गुज़रे कुछ दिन जो रंज के मारे ।
ज़र्द रुख़सार हो गये सारे ॥

हो गई फिर तो ऐसी हालते ज़ार ।
जैसे बरसों का हो कोई बीमार ॥

दिल को थी ग़म से ख़ुद फ़रामोशी ।
लग गई लब पे मोहरे ख़ामोशी ॥

न रहा दिल को ज़ब्त का यारा ।
सर जहां पाया, धड़ से दे मारा ॥

रंज लाखों तरह के सहते थे ।
लब थे ख़ामोश, अश्क बहते थे ॥

हिज्र से गैर हो गई हालत ।
ग़म से बिल्कुल बदल गई सूरत ॥

हुआ हैरान अपना बेगाना ।
जिसने देखा मुझे न पहचाना ॥

वाल्दैन की नसीहत

देखे मां बाप ने जो यह अंदाज़ ।
रूह क़ालिब से कर गई परवाज़ ॥

पूछा मुझ से यह क्या है हाल तेरा ।
किस तरफ़ है बंधा ख़्याल तेरा ॥

सच बता दे कि ध्यान किसका है ।
दिल में ग़म, मेरी जान किसका है ॥

रंज किस शोला रू का खाते हो ।
शमा की तरह पिघले जाते हो ॥

ज़र्द चेहरा है अरग़वां की तरह ।
टुकड़े पौशाक है कतां की तरह ॥

कौन सी माहेरू पे मरते हो ।
सच कहो किसको प्यार करते हो ॥

यह कहा मे:जबीं मिला है कौन ।
तुम को ऐसा हसीं मिला है कौन ॥

खाते हो पीते हो न सोते हो ।
रोज़ उठ उठ के शब को रोते हो ॥

नहीं मालूम कौन है वह छिनाल ।
कर दिया मेरे लाल का यह हाल ॥

मेरे बच्चे की जो छुड़ाये जान ।
सात बार उसको मैं करूँ क़ुर्बान ॥

अल्लाह आमीं से हम तो यों पालें ।
आप आफ़त में दिल को यों डालें ॥

तेरे पीछे की तल्ख़ सब औकात ।
दिन को दिन समझी और न रात को रात ॥

पाला किस किस तरह तुम्हें जानी ।
कौन मन्नत थी जो नहीं मानी ॥

रोशनी मस्जिदों में करती थी ।
जाके दरगा में चौकी भरती थी ॥

अब जो नामे खुदा जवान हुये ।
ऐसे मुख्तार मेरी जान हुये ॥

हां मियां सच है, यह खुदा की शान ।
तुम करो जान बूझ कर हलकान ॥

हम तो यों फूंक फूंक रक्खें क़दम ।
आप देते फिरें हर एक पे दम ॥

हम यहां रंजोग़म में रोते हैं ।
आप ग़ैरों पे जान खोते हैं ॥

यों मिटाओगे जान कर हमको ।
थी न इस रोज़ की खबर हमको ॥

देखती हूं जो तेरा हाले ज़बूं ।
खुश्क होता है मेरे जिस्म का ख़ूं ॥

यों तो बर्बाद तू शबाब न कर ।
मिट्टी माँ बाप की ख़राब न कर ॥

कुछ तो कह हम से अपने क़ल्ब का हाल ।
किसका भाया है तुझको हुस्नो जमाल ॥

दिल हुआ तेरा शेफ़ता किसका ।
सच बता है फ़रेफ़ता किसका ॥

कैसा दो दिन में जी निढाल हुआ ।
दाई बंदी का क्या यह हाल हुआ ॥

आईना तो उठा के देख ज़रा ।
सुत गया दो ही दिन में मुंह कैसा ॥

सुध न खाने की है न पीने की ।
कौन सी फिर उम्मीद जीने की ॥

किसकी उल्फ़त में है यह हाल किया ।
कुछ न मां बाप का ख़याल किया ॥

दिल पे गुज़रा है क्या मलाल तो कह ।
मुंह से नाशुदनी अपना हाल तो कह ॥

यूँ ही गर हो गया तू सौदाई ।
दूर पहुँचेगी इसकी रुस्वाई ॥

ऐसे दीवाने को भरेगा कौन ।
शादी और ब्याह फिर करेगा कौन ॥

कर दिया किसने ऐसा आवारा ।
कि नहीं बनता अब कोई चारा ॥

आगे तो यह न था तेरा दस्तूर ।
किस से सीखा है इस तरह के अमूर ॥

मेरे तो देख कर गये औसान ।
लैला मजनूँ के तू ने काटे कान ॥

बातें यह वाल्दैन की सुनकर ।
एक और क़ल्ब पर लगा नश्तर ॥

शर्म के मारे मुंह को ढाँप लिया ।
कुछ न माँ बाप को जवाब दिया ॥

गुज़रा यां तक तो यह हमारा हाल ।
अब क्यां उसका होता है अहवाल ॥

मैं तो खाये हुये था इश्क़ का तीर ।
पर हुई उसके दिल पे भी तासीर ॥

छलके आँखों के दोनों पैमाने ।
दिल लगा आप ही आप घबराने ॥

आतिशे इश्क़ से उठा जो धुआं ।
बातों बातों में बढ़ गया खफ़क़ां ॥

गोश फ़रयादे क़ल्ब सुनने लगे ।
ख़ुद बख़ुद हाथ पाओं धुनने लगे ॥

दर्दोग़म दिल को आ गया जो पसंद ।
सोना रातों का हो गया सौगंद ॥

मौजे उल्फ़त उसे डुबोने लगी ।
एक उलझन सी दिल को होने लगी ॥

घटने ताक़त लगी जो रोज़ बरोज़ ।
आतिशे हिज्र हो गई दिलसोज़ ॥

दाग़ ज्यों ज्यों जिगर के जलते थे ।
अश्क गर्म आँख से निकलते थे ॥

गर्म नाले थे, लब पे आह थी सर्द ।
दिल में होता था मीठा मीठा दर्द ॥

यूँ तड़पता था उसके सीने में दिल ।
जिस तरह लोटे ताइरे बिस्मिल ॥

हो गई जब कमाल हालते ज़ार ।
शत्र को रहने लगा उसे भी बुख़ार ॥

सच है किस तरह जी उदास न हो ।
कोई हमराज़ भी जो पास न हो ॥

न रुका उसके रोके से दिले ज़ार ।
जी में बाक़ी रहा न सब्रो क़रार ॥

नामए महबूब

लिखने पढ़ने से था जो उसको ज़ौक़ ।
सोच कर दिल में लिखा एक ख़ते शौक़ ॥

भेजा मुझको वह बेख़तर नामा ।
डर से लिखा मगर न सरनामा ॥

एक मामा ने आ के चुपके से ।
ख़त दिया उनका हाथ में मेरे ॥

खोल कर मैं ने जो उसे देखा ।
कुछ अजब दर्द से यह लिक्खा था ॥

"हो यह मालूम तुम को बादे सलाम।
ग़मे फ़ुरक़त से दिल है बे आराम॥

अपने कोठे पे तू नहीं आता।
दिल हमारा बहुत है घबराता॥

शक्ल दिखला दे किब्रिया के लिये।
बाम पर आ ज़रा ख़ुदा के लिये॥

इस मुहब्बत पे हो ख़ुदा की मार।
जिसने यूँ कर दिया मुझे नाचार॥

सारे उल्फ़त ने खो दिये औसान।
वरना यह लिखती मैं, ख़ुदा की शान॥

अब कोई इसमें क्या दलील करे।
जिसको चाहे ख़ुदा ज़लील करे॥

जवाबे आशिक़

पढ़ के मैं ने लिखा ये उसको जवाब ।
क्या लिखूं तुमको अपना हाले ख़राब ॥

बन गई यौं तो जान पर मेरी ।
ख़ूब ली आप ने ख़बर मेरी ॥

हिज्र में मर के जिन्दगानी की ।
अब भी पूछा तो मेहरबानी की ॥

जब से देखा है आप का दीदार ।
दिल से जाता रहा है सब्रोक़रार ॥

रोज़ तप से बुख़ार रहता है ।
सर पे एक जिन सवार रहता है ॥

तेरे क़दमों की हूँ क़सम खाता ।
होश दो दो पहर नहीं आता ॥

पूछता है जो कोई आके हाल ।
और होता है मेरे दिल को मलाल ॥

कहूँ किस किस से इस कहानी को ।
आग लग जाये इस जवानी को ॥

हो गई है कुछ ऐसी ताक़ते ताक़ ।
उठ नहीं सकता बारे रंजे फ़िराक ॥

हिल के पानी पिया नहीं जाता ।
वरना हुक्म आप का बजा लाता ॥

पाता ताक़त जो तालिबे दीदार ।
बाम पर आता दिन में सौ सौ बार ॥

पहुंचा जिस वक़्त से तेरा मकतूब ।
जिन्दगी का बंधा है कुछ असलूब ॥

रंज राहत से गर बदल जाये ।
क्या अजब है जो दिल संभल जाये ॥

पेशक़दमी जो तुम ने की मेरे साथ ।
इसमें जिल्लत की कौन सी है बात ॥

नहीं कुछ इसमें आप का है क़सूर ।
मेरी उल्फ़त का यह असर है जरूर ॥

इश्क़ का है असर मेरे वल्लाह ।
वरना तुम लिखतीं मआज्ज अल्लाह ॥

तुम तो वह लोग होते हो जल्लाद ।
नहीं सुनते करे कोई फ़रयाद ॥

हो बला से किसी का हाल बुरा ।
कोई मर जाये तुम को क्या परवा ॥

नहीं मुमकिन तुम्हारा बल जाये ।
दम भी आशिक़ का गर निकल जाये ।

अब मैं लिखता हूँ आपको यह हुजूर ।
वस्ल की फ़िक्र चाहिये है जरूर ॥

इस में ग़फ़लत जो तू ने की अय माह ।
हाल होगा मेरा कमाल तबाह ॥

ग़ैर है हिज्र से मेरी हालत ।
ग़म उठाने की अब नहीं ताक़त ॥

दिल पे आफ़त अजीब आई है ।
जान बच जाये तो ख़ुदाई है ॥

जान को किस घड़ी क़रार आया ।
ग़श ने फ़ुर्सत जो दी बुख़ार आया ॥

तपिशे दिल ने गर किया हुश्यार ।
वह्म आने लगे हज़ार हज़ार ॥

दिल की वहशत ने कुछ जो मारा जोश ।
वह भी जाते रहे जो आये थे होश ॥

आश्ना दोस्त आ गये जो कभू ।
जिसने देखा निकल पड़े आंसू ॥

झूट समझें इसे हुज़ूर नहीं ।
जान जाती रहे तो दूर नहीं ॥

मर गये हम तो रंजे फ़ुर्क़त से ।
पर ख़बर की न अपनी हालत से ॥

अब जो भेजी यह आप ने तहरीर ।
है यह लाज़िम कि वह करो तद्बीर ॥

सख़्तियां हिज्र की बदल जायें ।
दिल की सब हसरतें निकल जायें ॥

देके ख़त मैंने यह कहा उस से ।
जल्द इसका जवाब ला उस से ॥

पहुंचा जब उस तलक मेरा मक्तूब ।
हंस के बोली कि वाह वा क्या ख़ूब ॥

जवाबे मकतूब

फिर किया यह जवाब में तहरीर ।
"कुछ क़ज़ा तो नहीं है दामनगीर ॥

ज़िक्र इन बातों का यहाँ क्या था ।
छेड़ने की तेरे यह लिक्खा था ॥

ऐसी बातें थीं कब यहां मंज़ूर ।
था फ़क़त तेरा इम्तेहां मंज़ूर ॥

यह तो लिक्खे थे सब हंसी के कलाम ।
वरना इन बातों से मुझे क्या काम ॥

मुझको ऐसी थी क्या तेरी परवा ।
बाम पर तू बला से आ के न आ ॥

बात थी यह कमाल अक़्ल से दूर ।
झूट लिखने पे हो गये मग़रूर ॥

तुम पे मैं मरती, क्या क़यामत थी ।
क्या मेरे दुश्मनों की शामत थी ॥

मेरी जानिब से यह गुमां, क्या ख़ूब ।
झूट जमजम से है बहुत मरग़ूब ॥

यह न समझा कि माजरा क्या है ।
यूं भी कोई किसी को लिखता है ॥

काला दाना ज़रा उतरवा लो ।
राई लोन इस समझ पे कर डालो ॥

तुझ पे मरते भी गर मेरे बदख़्वाह ।
यूं न लिखती कभी मआज़अल्लाह ॥

जान पापोश से निकल जाती ।
पर तबीअत न यूं बदल जाती ॥

ऐसी बातों में होता है बदनाम ।
फिर न लिखियेगा इस तरह के कलाम ॥

रंज आ जाता है इसी कद से ।
न बढ़े आदमी कभी हद से ॥

क्या समझ कर लिखा था यह मज्जमून ।
अच्छी होती नहीं है इतनी दून ॥

जी में ठानी है क्या बताओ तो ।
खानगी कसबी कोई समझते हो ॥

मालज्जादी नहीं यहाँ कोई ।
जो करे तुम से गर्मियाँ कोई ॥

देख तहरीर फील लाये आप ।
ख़ूब जल्दी मज्जे में आये आप ॥

तालिबे वस्ल जो हुये हम से ।
हैगा सादा मिज्जाज जम जम से ॥

वस्ले हबीब

रही कुछ रोज तो यही तहरीर।
फिर मुआफ़िक़ हुई मेरी तक़दीर॥

हुये उस गुल से वस्ल के इक़रार।
उठ गई दरमियाँ से सब तकरार॥

जो कहा था अदा किया उसने।
वादा एक दिन वफ़ा किया उसने॥

रात भर मेरे घर में रह के गई।
सुबह के वक़्त फिर यह कह के गई॥

"बात इस दम की याद रखियेगा ।
एक दिन यह मज़ा भी चखियेगा ॥

बिगड़ेगी जब न कुछ बन आयेगी ।
आप के पीछे जान जायेगी ॥

लो मेरी जान जाती हूँ अब तो ।
याद रखियेगा मेरी सोहबत को ॥

जो ख़ुदा फिर मिलायेगा तुम से ।
तो कहूँगी मैं हाल आ तुम से "॥

सुनके मैं ने दिया यह उसको जवाब ।
न करो दिल को इस क़दर बेताब ॥

कहती तुम क्या हो, यह ख़ुदा न करे ।
यह सितम होवे किबरिया न करे ॥

उम्र भर हम वफ़ा न तोड़ेंगे ।
ज़िन्दगी भर न मुंह को मोड़ेंगे ॥

प्यार करती जो थी वह ग़ैरते हूर ।
रक्खा मिलने का उसने यह दस्तूर ॥

पंजशंबे को जाती थी दरगाह ।
वाँ से आती थी मेरे घर वह माह ॥

ऐश होने लगे मेरे उनके ।
ग़ैर जलने लगे, यह सुन सुन के ॥

ग़मे फ़िराक़

इत्तेफ़ाक़ ऐसा फिर हुआ नागाह ।
दो महीने तलक न आई वह माह ॥

क़ता सब हो गये पयामो सलाम ।
न रही शक्ले राहतो आराम ॥

तब्आ को हो गई परीशानी ।
अक़्ल को थी अजीब हैरानी ॥

दिल को तशवीश थी यह हद से ज्याद ।
दफ़अतन पड़ गई यह क्या उफ़ताद ॥

थी न मुझसे यहाँ किसी से लाग।
किस ने इस तरह की लगाई आग ॥

दिल में उसके यह किसने बल डाला।
जो मेरे ऐश में ख़लल डाला ॥

कुछ तो ऐसा हुआ है अफ़साना।
जो यहाँ तक न हो सका आना ॥

नहीं मालूम क्या पड़ी उफ़ताद।
जो फ़रामोश की हमारी याद ॥

कौन ऐसा है जाये घर उसके।
किसको भेजूँ मकान पर उसके ॥

क्यों न बेज़ार हूँ मैं जीने से।
नहीं देखा है दो महीने से ॥

जान आखों में खिच के आई है।
अब नहीं ताक़ते जुदाई है ॥

कर लिया हो सका जहाँ तक सब्र।
अब कहो दिल करे कहाँ तक सब्र ॥

दो महीने न देखे जब्र गुल को ।
चैन किस तरह आये बुलबुल को ॥

रात फिर किस तरह गुजारी जाय ।
किस तरह दिल की बेक़रारी जाय ॥

तबा किस तरह फिर बहल जाये ।
जिस्म से रूह जब निकल जाये ॥

आख़री दीदार

आई नौचन्दी इतने में नागाह
इस बहाने से आई वह दरगाह ॥

बसकि मरती थी नाम पर मेरे।
छुप के आई वहाँ से घर मेरे ॥

थी न फ़ुरसत जो अश्कबारी से।
उतरी रोती हुई सवारी से ॥

फिर लपट कर मेरे गले एक बार।
हाल करने लगी वह यूँ इज्जहार ॥

"अक़रबा मेरे हो गये आगाह ।
तुम से मिलने की अब नहीं कोई राह ॥

मश्वरे यह हुए हैं आपस में ।
भेजते हैं मुझे बनारस में ॥

वह छुटे हम से जिसको प्यार करें ।
जब्र क्यों कर यह अख़त्यार करें ॥

गो ठिकाने नहीं हैं होशोहवास ।
पर यह कहने को आई हूँ तेरे पास ॥

रुख़स्त व वसीयत

जाये इबरत सराये फ़ानी है ।
मौरिदे मर्ग नागहानी है ॥

ऊँचे ऊँचे मकान थे जिन के ।
आज वह तंग गोर में हैं पड़े ॥

कल जहाँ पर शगूफ़ा ओ गुल थे ।
आज देखा तो ख़ार बिल्कुल थे ॥

जिस चमन में था बुलबुलों का हुजूम ।
आज उस जा है आशियानये बूम ॥

बात कल की है नौजवाँ थे जो ।
साहबे नौबतो निशाँ थे जो ॥

आज ख़ुद हैं न है मकाँ बाक़ी ।
नाम को भी नहीं निशाँ बाक़ी ॥

ग़ैरते हूर महजबीं न रहे ।
हैं मकांगर तो वह मकीं न रहे ॥

जो कि थे बादशाहे हफ़्त अक़लीम ।
हुए जा जा के ज़ेरे ख़ाक मुक़ीम ॥

कोई लेता नहीं अब उसका नाम ।
कौन सी गोर में गया बहराम ॥

अब न रुस्तम न साम बाक़ी है ।
एक फ़क़त नाम ही नाम बाक़ी है ॥

कल जो रखते थे अपने सर पर ताज ।
आज हैं फ़ातेहा को वह मुहताज ॥

थे जो ख़ुदसर जहाँ में मशहूर ।
ख़ाक में मिल गया सब उनका ग़ुरूर ॥

इत्र मिट्टी का जो न मलते थे ।
न कभी धूप में निकलते थे ॥

गर्दिशे चर्ख़ से हलाक हुये ।
इस्तख़्वाँ तक भी उनके ख़ाक हुये ॥

थे जो मशहूर क़ैसरो फ़ग़फ़ूर ।
बाक़ी उनका नहीं निशाने क़बूर ॥

ताज में जिनके टकते थे गौहर ।
ठोकरें खाते हैं वह कासये सर ॥

रश्के यूसुफ़ जो थे जहां में हसीन ।
खा गए उनको आसमानो ज़मीन ॥

हर घड़ी मुनक़लिब ज़माना है ।
यही दुनिया का कारख़ाना है ॥

है न शीरीं न कोहकन का पता ।
न किसी जा है नल दमन का पता ॥

बूए उल्फ़त तमाम फैली है ।
बाक़ी अब क़ैस है न लैली है ॥

सुबह को ताइराने ख़ुश अल्हान ।
पढ़ते है कुल्लो मन अलैहा फ़ान ॥

मौत से किसको रस्तगारी है ।
आज वह कल हमारी बारी है ॥

जिन्दगी बेसबात है इसमें ।
मौत ऐन हयात है इसमें ॥

हम भी गर जान देदें खा कर क़सम ।
तुम न रोना हमारे सर की क़सम ॥

दिल को हमजोलियों में बहलाना ।
या मेरी क़ब्र पर चले आना ॥

जाके रहना न उस मकाँ से दूर ।
हम जो मर जायें तेरी जाँ से दूर ॥

रूह भटकेगी गर न पायेगी ।
ढूंढने किस तरफ़ को जायेगी ॥

रोके रहना बहुत तबीअत को ।
याद रखना मेरी वसीयत को ॥

जब्त करना अगर मलाल रहे।
मेरी रुसवाई का ख़याल रहे॥

मेरे मरने की जब ख़बर पाना।
यूं न दौड़े हुए चले आना॥

जमा हो लें सब अक़रबा जिसदम।
रखना उस वक़्त तुम वहां पे क़दम॥

कहे देती हूं जी न खोना तुम।
साथ ताबूत के न रोना तुम॥

हो गये तुम अगरचे सौदाई।
दूर पहुंचेगी इसकी रुसवाई॥

लाख तुम कुछ कहो न मानेंगे।
लोग आशिक़ हमारा जानेंगे॥

ताना जन होंगे सब ग़रीबो अमीर।
क़ब्र पर बैठना न हो के फ़क़ीर॥

सामना हो हज्जार आफ़त का।
पास रखना हमारी इज्ज़त का॥

जब जनाज़ा मेरा अज़ीज़ उठायें ।
आप बैठे वहाँ न अश्क बहायें ॥

मेरी मिन्नत पे ध्यान रखियेगा ।
बंद अपनी ज़बान रखियेगा ॥

तज़केरा कुछ न कीजियेगा मेरा ।
नाम मुंह से न लीजियेगा मेरा ॥

अश्क आँखोंसे मत बहाइयेगा ।
साथ ग़ैरों की तरह जाइयेगा ॥

आप काँधा न दीजियेगा मुझे ।
सब में रुसवा न कीजियेगा मुझे ॥

रंग दिल के बदल न जायें कहीं ।
मुंह से नाले निकल न जायें कहीं ॥

साथ चलना न सर के बाल खुले ।
ता किसी शख़्स पर न हाल खुले ॥

होते अतिश के हैं यह पर काले ।
ताड़ जाते हैं ताड़ने वाले ॥

हो क्यों गर किसी जगह मेरा हाल ।
तुम न करना कुछ उस तरफ़ को ख़याल ॥

ज़िक्र सुनकर मेरा न रोदेना ।
मेरी इज़्ज़त न यूं डुबो देना ॥

रंजे फ़ुरक़त मेरा उठा लेना ।
जी किसी और जा लगा लेना ॥

होगा कुछ मेरी याद से न हुसूल ।
दिल को कर लेना और से मशग़ूल ॥

रंज करना न मेरा मैं क़ुरबान ।
सुन लो गर अपनी जान है तो जहान ॥

दे न उसको ख़ुदा कभी कोई दर्द ।
होता नाज़ुक कमाल है दिले मर्द ॥

दिल में कुढ़ना न मुझ से छूट के तू ।
जान देना न घूट घूट के तू ॥

आके रो लेना मेरी क़ब्र के पास ।
ता निकल जाये तेरे दिल की भड़ास ॥

आंसू चुपके से दो बहा लेना ।
क़ब्र मेरी गले लगा लेना ॥

अगर आ जाये कुछ तबीयत पर ।
पढ़ना क़ुरआन मेरी तुरबत पर ॥

ग़ुंचये दिल मेरा खिला जाना ।
फ़ूल तुर्बत पे दो चढ़ा जाना ॥

रोके करना न अपना हाल ज़बूं ।
ता न हो जाये दुश्मनों को जुनूं ॥

देखिये किस तरह पड़ेगी कल ।
सख़्त होती है मनज़िले अव्वल ॥

मेरे मरक़द पे रोज आना तुम ।
फ़ातेहा से न हाथ उठाना तु म ॥

है यह हासिल सब इतनी बातों से ।
मिट्टी देना तुम अपने हाथों से ॥

उम्र भर कौन किसको रोता है ।
कौन साहब किसी का होता है ॥

कभी आ जाये गर हमारा ध्यान।
जानना हम पे हो गई क़ुरबान॥

दिल में कुछ आने दीजियो न मलाल।
ख़्वाब देखा था कीजियो यह ख़याल॥

रंजोराहत जहाँ में तौअम है।
कहीं शादी है और कहीं ग़म है॥

है किसी जा पे जश्न शामोपगाह।
है किसी जा सदाये नालओ आह॥

मर्ग का किस को इन्तज़ार नहीं।
जिन्दगी का कुछ एतबार नहीं॥

फिर मुलाक़ात देखें हो कि न हो।
आज दिल खोल कर गले मिल लो॥

ख़ूब सा आज देख भाल लो तुम।
दिल की सब हसरतें निकाल लो तुम॥

आओ अच्छी तरह से कर लो प्यार।
कि निकल जाये कुछ तो दिल का बुख़ार॥

दिल में बाक़ी रहे न कुछ अरमान ।
ख़ूब मिल लो गले से मैं क़ुरबान ॥

हश्र तक होगी फिर यह बात कहाँ ।
हम कहाँ, तुम कहाँ, यह रात वहाँ ॥

कह लो सुन लो जो कुछ कि जी में आये ।
फिर ख़ुदा जाने क्या नसीब दिखाये ॥

दिल को अपने करो मलूस नहीं ।
रोने धोने से कुछ हुसूल नहीं ॥

हमको गाड़े जो अपने दिल को कुढ़ाये ।
हमको है है करे जो अश्क बहाये ॥

उम्र तुम को तो है अभी खेना ।
दिन बहुत से पड़े हैं रो लेना ॥

बाहें दोनों गले में डाल लो आज ।
जो जो अरमान हों निकाल लो आज ॥

फिर ख़ुदा जाने क्या मशीयत है ।
इतनी मुहबत बहुत ग़नीमत है ॥

कल किसे बैठ कर करोगे प्यार ।
किस की लोगे बलायें तुम हरबार ॥

कल गले से किसे लगाओ गे ।
यूँ किसे गोद में बिठाओ गे ॥

हाल किसका सुनायेगी आकर ।
किसको मामा बुलायेगी आकर ॥

हम तो उठते हैं इस मकाँ से कल ।
अब तो जाते है इस जहाँ से कल ॥

याद इतनी तुम्हें दिलाते जायें ।
पान कल के लिये लगाते जायें ॥

हो चुका आज जो कि था होना ।
कल बसायेंगे क़ब्र का कोना ॥

ख़ाक में मिलती है यह सूरते एश ।
फिर कहाँ हम कहाँ यह सुहबते एश ॥

देख लो आज हमको जी भर के ।
कोई आता नहीं है फिर मर के ॥

ख़त्म होती है जिन्दगानी आज ।
ख़ाक में मिलती है जवानी आज ॥

चुप रहो क्यों अबस ही रोते हो ।
मुफ़्त काहे को जान खोते हो ॥

समझो इस शब को शबेबरात की रात ।
हम हैं मेहमाँ तुम्हारे रात की रात ॥

चैन दिल को न आयेगा तुझ बिन ।
अब के बिछड़े मिलेंगे हश्र के दिन ॥

अब तुम इतनी दुआ करो मेरी जान ।
कल की मुश्किल ख़ुदा करे आसान ॥

फल उठाया न जिन्दगानी का ।
न मिला कुछ मजा जवानी का ॥

दिल में ले कर तुम्हारी याद चले ।
बाग़े आलम से नामुराद चले ॥

कहती है बार हिम्मते इश्क़ ।
है यही मुक़्तजाये ग़ैरते इश्क़ ॥

चार पाई पे कौन पड़ के मरे ।
कौन यूँ एड़ियां रगड़ के मरे ॥

इश्क़ का नाम क्यों डुबो जायें ।
आज ही जान क्यों न खो जायें ॥

जब तलक चर्ख़ बे मदार रहे ।
यह फ़साना भी यादगार रहे ॥

बोली घबरा के फिर ठहर मेरी जान ।
कुछ सुना भी कि क्या बजा इस आन ॥

हसरते दिल निगोड़ी बाक़ी है ।
और यहाँ रात थोड़ी बाक़ी है ॥

गोद में अपनी फिर बिठा लो जान ।
फिर गले से हमें लगा लो जान ॥

डाल दो फिर गले में बाहों को ।
फिर गिलौरी चबा के मुंह में दो ॥

फिर कहाँ हम कहाँ यह सुहबते यार ।
कर लो फिर हमको भींच भींच के प्यार ॥

फिर मेरे सर पे रख दो सर अपना।
गाल फिर रखदो गाल पर अपना॥

फिर उसी तरह मुंह को मुंह से मलो।
फिर वही बातें प्यार की कर लो॥

लहर फिर चढ़ रही है कालों की।
बू सुंघा दो तुम अपने बालों की॥

फिर हम उठने लगें, बिठा लो तुम।
फिर बिगड़ जायें हम, मना लो तुम॥

फिर लबों को चबा के बात करो।
फिर ज़रा मुस्कुरा के बात करो॥

फिर बलायें तुम्हारी यार लें हम।
आओ फिर सर से सर उतार लें हम॥

रो न इस तरह से तू ज़ारोक़तार।
दुश्मनों को कहीं चढ़े न बुख़ार॥

आप अच्छे भले बिछड़ जायें।
और लेने के देने पड़ जायें॥

काट ले कोई धड़ से सर मेरा ।
बाल बाँका न हो मगर तेरा ॥

मैं दिलो जाँ से हूँ फ़िदा तेरी ।
लेके मर जाऊँ मैं बला तेरी ॥

अब तू क्यों ठंडी सांसें भरता है ।
क्यों मेरे दिल के टुकड़े करता है ॥

मैं अभी तो नहीं गई हूँ मर ।
क्यों सुजाई हैं आँखें रो रो कर ॥

इस क़दर हो रहा है क्यों ग़मगीं ।
क्यों मिटाता है अपनी जाने हज़ीं ॥

कर न रो रो के अपना हाल जबूं ।
अरे ज़ालिम अभी तो जीती हूं ॥

अश्क बहते हैं नागवार तेरे ।
तू न रो हो मई निसार तेरे ॥

ऐसे क़िस्से हज़ार होते हैं ।
यूं कहीं मर्दुये भी रोते हैं ॥

यूं तो आंसू न तू बहा अपने ।
दिल को मज़बूत रख ज़रा अपने ॥

रंज से मेरे कुछ उदास न हो ।
यूं तू लिल्लाह बदहवास न हो ॥

तुम तो इतने में हो गये रंजूर ।
थक गये, और अभी है मंज़िल दूर ॥

इसी ग़म ने तो मुझको मारा है ।
सदमा तेरा नहीं गवारा है ॥

अपने मरने का कुछ नहीं है अलम ।
दिल में मेरे फ़क़त है इसका ग़म ॥

जान हम ने तो इस तरह खोई ।
कौन तेरी करेगा दिलजोई ॥

आके समझायेगा बुझायेगा कौन ।
इस तरह से गले लगायेगा कौन ॥

कौन रोकेगा इस तबीयत को ।
किस से कह जाऊं इस वसीयत को ॥

गोकि बेजा तेरा हिरास नहीं ।
कोई दिलसोज़ भी तो पास नहीं ॥

मैं कहां हूं जो साथ दूं तेरा ।
हाथ में किसके हाथ दूं तेरा ॥

यूं तसल्ली तेरी करेगा कौन ।
मेरी सूरत भला मरेगा कौन ॥

कौन यूं खुश करेगा दिल तेरा ।
दिल है इस ग़म से मुज़्महिल मेरा ॥

जी लगेगा न साथ में उसका ।
दिल लिये रहना हाथ में उसका ॥

पर मैं अब इसको क्या करूं कमबख़्त ।
आसमाँ दूर है ज़मीं है सख़्त ॥

गोकि उक़्बा में रूसियाह चली ।
मगर अपनी सी मैं निबाह चली ॥

जी को तुम पर फ़िदा किया मैं ने ।
हक़ वफ़ा का अदा किया मैं ने ॥

बोली फिर जानुओं पे मार के हाथ ।
नहीं मालूम अब है कितनी रात ॥

ज्यों ज्यों घड़याल वां बजाता था ।
जी मेरा सनसनाया जाता था ॥

यूं तो कोई न दर्दो ग़म में कुढ़े ।
फूले जाते हैं हाथ पांव मेरे ॥

कुछ अजब हो रहा है जान का तौर ।
कहती हूं कुछ, निकलता है कुछ और ॥

आंसू आंखों में भरभर आते हैं ।
दस्तो पा सारे थरथराते हैं ॥

दिल को समझाती हूँ मैं बहुतेरा ।
पर संभलता नहीं है जी मेरा ॥

गो तू बैठा हुआ है पास मेरे ।
पर ठिकाने नहीं हवास मेरे ॥

होश आये हुये भी जाते हैं ।
दिल में क्या क्या ख़याल आते हैं ॥

पेश यूं फ़ुर्क़ते हबीब न हो ।
किसी दुश्मन को भी नसीब न हो ॥

दूसरा अब यह और मातम है ।
साँग बाक़ी बहुत हैं, शब कम है ॥

ख़ाक तसकीने जाने ज़ार करें ।
अब वसियत करें कि प्यार करें ॥

सुन के मैं ने दिया यह उसको जवाब ।
दिल को मेरे बस अब करो न कवाब ॥

तुम तो यूं अपनी जान दो मेरी जान ।
मैं वसीयत सुनूं ख़ुदा की शान ॥

दिल से रखना ज़रा यह अपने दूर ।
कौन कमबख़्त यह करेगा उमूर ॥

मुझ पे यह दिन तो किबरिया न करे ।
तुम मरो मैं जियूं ख़ुदा न करे ॥

जान दे दोगी तुम जो खा कर सम ।
मैं भी मर जाऊंगा ख़ुदा की क़सम ॥

जो यह देखेगा खूब रोयेगा ।
आगे पीछे जनाजा होयेगा ॥

एक जरा मुझ से तो कहो यह हाल ।
जी में क्या आया आपके यह ख़याल ॥

दिल ही दिल में अलम उठाती हो ।
जान देती हो, जहर खाती हो ॥

पहुंचा माँ बाप से अगर है अलम ।
उसका करना न चाहिये तुम्हें ग़म ॥

जो कि होते हैं क़ौम के अशराफ़ ।
यूंही करते हैं वह मआफ़ क़ुसूर ॥

कुछ तुम्हीं पर नहीं है यह उफ़ताद ।
सब के माँ बाप होते हैं जल्लाद ॥

सदमा हर एक पे यह गुजरता है ।
जहर खा खा के कोई मरता है ॥

शिकवा माँ बाप का तो नाहक़ है ।
उनका औलाद पर बड़ा हक़ है ॥

हों जो नाराज़ यह क़यामत है ।
उनके क़दमों के नीचे जन्नत है ॥

तुम तो नामे ख़ुदा से हो दाना ।
इस पे रुतबा न उनका पहचाना ॥

क्या भरोसा हयात का उनकी ।
न बुरा मानो बात का उनकी ॥

होश रहते नहीं हैं इस सिन के ।
यह तो मेहमान हैं कोई दिन के ॥

इतनी सी बात का ग़ुबार है क्या ।
उनके कहने का एतबार है क्या ॥

ग़ौर से कीजिये जो दिल में ख़याल ।
उनका ग़ुस्सा नहीं है जये मलाल ॥

सुनके उसने दिया यह मुझको जवाब ।
हम ने देखी नहीं है चश्मे अताब ॥

बेहया ऐसी ज़िन्दगी को सलाम ।
मुंह पे आये न थे कभी यह कलाम ॥

ताने सुनती हूं दो महीने मे ।
मौत बेहतर है ऐसे जीने से ॥

खूने दिल कब तलक पिये कोई ।
बेहया बन के क्या जिये कोई ॥

नौज इनसान हमैयत हो ।
आदमी क्या न जिसको गैरत हो ॥

बात वह किस तरह बशर से उठे ।
न सुनी हो कभी जो कानों से ॥

वह सुने जिसको इसकी आदत है ।
इसमें क्या अपनी अपनी गैरत है ॥

पर मेरे जीते जी तो बहरे खुदा ।
अपने मरने का जिक्र मुंह पे न ला ॥

कौन सा पड़ गया है रंजोमहन ।
जान क्यों देंगे आप के दुश्मन ॥

तुम ने जी देने की जो की तदबीर ।
हश्र के रोज हूंगी दामनगीर ॥

तू सलामत जहाँ में रह मेरी जां।
निकलें माँ बाप के तेरे अरमां॥

वास्ते मेरे अपना दिल न कुढ़ा।
चाँद सी बन्नो घर में ब्याह के ला॥

है यही लुत्फ़ जिन्दगानी का।
देख सुख अपनी नौजवानी का॥

चार दिन है यह नालाओ फ़रयाद।
उम्र भर कौन किसको करता है याद॥

लुत्फ़ दुनिया के जब उठाओगे।
हमको दो दिन में भूल जाओगे॥

रुख़सते शब

था यही जिक्र जो बजा घड़याल ।
सुनते ही उसके हो गई बेहाल ॥

हो गया फ़र्त ग़म से चेहरा ज़र्द ।
दस्तो पा थरथरा के हो गये सर्द ॥

मुर्दनी रुख़ पे छा गई उसके ।
दिल में वहशत समा गई उसके ॥

दिल में गुज़रा जो उसके सुबह का शक ।
हुई इसतादह जाके ज़ेरे फ़लक ॥

ठण्डी जिस दम चली नसीमे सहर ।
हो गया हाल और भी अबतर ॥

इतने में सुब्ह की बजी दरवी ।
दूनी चेहरे की हो गई जर्दी ॥

हुये साबित जो सुब्ह के आसार ।
हो गई और उसकी हालते जार ॥

बेद की तरह जिस्म थर्राया ।
सर से ले पाँव तक अर्क़ आया ॥

बातें करनी जो थीं सो भूल गई ।
दम लगा चढ़ने साँस फ़ूल गई ॥

बोली घबरा के रहियो इसके गवाह ।
और कहा लाइलाहा इल लल्लाह ॥

अब फ़क़त यह है ख़ूं बहा मेरा ।
बख्श दीजियो कहा सुना मेरा ॥

कह के वह फिर चिमट गई एक बार ।
और किया ख़ूब भींच भींच के प्यार ॥

सर से ले कर बलायें ताब क़दम ।
बोली तुम पर निसार होते हैं हम ॥

आग लग जाये वह बड़ी कमबख़्त ।
बाम पर आई थी मैं कौन से वक़्त ॥

फिर यह बोली वह पोंछ कर आँसू ।
मेरे सर की क़सम न कुढ़ियो तू ॥

आज़माती थी तुझको कसती थी ।
मैं तेरे छेड़ने को हंसती थी ॥

दायमी जुदाई

कह के यह बात गई वह सवार ।
यों बंधा आंसुओं का आँख से तार ॥

आतिशे ग़म भड़क गई दूनी ।
तपिशे क़ल्ब ने की अफ़ज़ूनी ॥

याद आती थी जब वसीयते यार ।
वहम लाता था दिल हज़ार हज़ार ॥

थी मुसीबत जो यह बला अंगेज़ ।
ध्यान आते थे क्या क्या वहशत ख़ेज़ ॥

दिल में, कहने का उसके, था जो मलाल।
आते थे जहन में अजीब ख़याल॥

कौन रोकेगा जाके घर बैठे।
जो कहा है वही न कर बैठे॥

हर घड़ी था जो इज्तेराब फ़जूं।
चुपका रोता था बैठा मैं महजूं॥

कि उठा एक सिम्त से वह गुल।
होश जिससे कि उड़ गये बिल्कुल॥

शोला एक आग का भड़कने लगा।
मिस्ल बिस्मिल के दिल तड़पने लगा॥

यूं तो गुजरे थे दो पहर रोते।
और हाथों के उड़ गये तोते॥

हो गया दिल को इस तरह का हिरास।
आये सौ सौ तरीक़ के वसवास॥

कहा एक दोस्त से कि तुम जाकर।
जल्द इस शोरो गुल की लाओ खबर॥

रोते हैं हम से बदनसीब कोई ।
मर गया उनका क्या हबीब कोई ॥

यूं जो अपनी यह जान खोते हैं ।
कौन हैं किस लिये यह रोते हैं ॥

क्या हुआ इन पे सदमये जांकाह ।
यह जो करते हैं ऐसे नालाओ आह ॥

दौड़े आख़िर उधर मेरे अहबाब ।
ले कर आये ख़बर वहाँ से शिताब ॥

किया इस तरह आ के मुझसे बयान ।
कि यहाँ से है एक क़रीब मकान ॥

बाग़ के पास जो बना है घर ।
वाँ फ़रोकश है एक सौदागर ॥

यूं तो अेक शोर राह भर में है ।
पर यह आफ़त उन्हीं के घर में है ॥

साफ़ खुलता नहीं है यह असरार ।
मर गया कोई या कि है बीमार ॥

पर यह होता है अक़्ल से इदराक ।
कि नहीं बेसबब्र उड़ाते ख़ाक ॥

कुछ न कुछ तो है ऐसी रूदाद ।
कि यह है शोरे नालाओ फ़रयाद ॥

नहीं बरपा यह बेसबब्र मातम ।
है निकलता किसी जवान का दम ॥

हर बशर हो रहा है दीवाना ।
कोई मरता है साहबे ख़ाना ॥

नहीं क़ाबू में है किसी का दिल ।
पीटते सर हैं साहबाने महल ॥

नहीं देता सुनाई कुछ बिल्कुल ।
है फ़क़त एक हाये हाये का ग़ुल ॥

थमता एक दम भी वाँ ख़रोश नहीं ।
किस से पूछें, किसी में होश नहीं ॥

रोते जिस दर्द से हैं वह इस दम ।
देखा जाता नहीं ख़ुदा की क़सम ॥

कह गई थी जो वह कि खाउंगी ज़हर ।
मैं यह समझा कि हो गया वही क़हर ॥

गो हया से न उसका नाम लिया ।
दोनों हाथों से दिल को थाम लिया ॥

दोस्तों ने जो देखी यह सूरत ।
बोले इस तरह अज्ज रहे उल्फ़त ॥

हाले दिल यूं तुम्हारा ग़ैर जो है ।
मगर इस वक़्त क्या है ख़ैर तो है ॥

बे सबब किस लिये हुये हो उदास ।
उड़ गये क्यों तुम्हारे होशो हवास ॥

कौन सी आफ़त आ गई इस दम ।
मुर्दनी मुंह पे छा गई इस दम ॥

क्या है जो इतने बेक़रार हो अब ।
कोई मर जाये, तु. से क्या मतलब ॥

ऐसी हालत जो पेचो ताब की है ।
तुम को क्या वजह इज़्तेराब की है ॥

शहर में लोग रोज़ मरते हैं ।
ख़फ़क़ान इसका कोई करते हैं ॥

फ़िक्र करना है इस तरह की ज़बूं ।
यूंही हो जाता है बशर को जुनूं ॥

सुन के माँ बाप क्या कहेंगे, बताओ ।
होश पकड़ो ज़रा हवास में आओ ॥

तुमको क्या है जो जान खोते हो ।
बे सबब आप ही आप रोते हो ॥

हो रहे हो मलूल किस ग़म से ।
हाल दिल का कहो तो कुछ हम से ॥

ताना आमेज़ दोस्तों के बयाँ ।
हुए मालूम निश्तरे रगे जाँ ॥

न दिया उनको मारे ग़म के जवाब ।
ढाँप कर मुंह किया बहानये ख़्वाब ॥

उठ गये दोस्त आशना जिस दम ।
खोल कर मुंह को चुपके उट्ठे हम ॥

हाले दिल सीने में हुआ जो तबाह ।
बैठा कमरे में आन कर सरे राह ॥

देखा बरपा है एक हश्र का गुल ।
भीड़ से बंद राह है बिल्कुल ॥

उस तरफ़ से जो लोग आते हैं ।
यही आपस में कहते जाते हैं ॥

वालदैन का मातम

हाल उनका भी जाये रिक़्क़त है ।
दाग़ औलाद का क़यामत है ॥

नोच डाले हैं सारे सर के बाल ।
क्या परीशाँ है वालदैन का हाल ॥

आफ़ते ताज़ा सर पे है आई ।
बक रहे हैं मिसाले सौदाई ॥

ध्यान उनकी तरफ़ जो जाता है ।
ग़म से मुंह को कलेजा आता है ॥

जो कि थे उनमें साहबे औलाद ।
हाल अबतर था उनका हद से ज़्याद ॥

कहते थे कूट कर सरो सीना ।
क्यों न दुश्वार उनको हो जीना ॥

मर्गे औलाद का यह मातम है ।
रंजोग़म जिस क़दर करें कम है ॥

कोई कहता था कैसी आफ़त है ।
नौजवान मरना भी एक क़यामत है ॥

यूं तो है अज पये जमाना मर्ग ।
न मरे पर कोई जवाना मर्ग ॥

कोई बोला कि है सभी को मलाल ।
देखा जाता नहीं है बाप का हाल ॥

आतिशे ग़म से दिल हुआ है कबाब ।
है तमाँ भिस्ले माहिये बे आब ॥

चश्मा जारी है चश्मे गिरयाँ का ।
होश बाक़ी नहीं तनो जाँ का ॥

नहीं दम भर किसी को वाँ आराम ।
देखने वाले रो रहे हैं तमाम ॥

फोड़ डाले हैं सब ने सर अपने ।
सरो-पा की नहीं ख़बर अपने ॥

बनिये बक़्क़ाल जान खोते हैं ।
सारे दूकानदार रोते हैं ॥

हाल देखा जो मैं ने यह उठकर ।
हिल गया सीने में दिले मुज़्तर ॥

न रही ताब रंज के मारे ।
लगे थर्राने दस्तो-पा सारे ॥

बहरे उल्फ़त ने दिल में मारा जोश ।
गिर पड़ा होके ख़ाक पर बेहोश ॥

इश्क़ की थी जो दिल को बीमारी ।
ग़श का आलम सा हो गया तारी ॥

दो घड़ी बाद फिर जो आया होश ।
देखा बरपा अजब है जोशो ख़रोश ॥

महबूबह का ताबूत

आगे आगे है कुछ जुलूस खाँ ।
सर खुले पीछे कुछ हैं पीरोजवाँ ॥

सिन रसीदा हैं औरतें कुछ साथ ।
सीनओ सर पे मारती हैं हाथ ॥

कोई मामा है कोई दाई है ।
कोई अन्ना कोई खिलाई है ॥

जब वह भरती हैं ग़म से आहें सर्द ।
सुनने वालों के दिल में होता है दर्द ॥

होता ग़ैरों को है मलाल उनका ।
देखा जाता नहीं है हाल उनका ॥

कुछ क्यों ऐसे होते जाते हैं ।
रास्ते वाले रोते जाते हैं ॥

उसके पीछे पड़ी फिर उसपे निगाह ।
कि न देखे बशर मआज़ अल्लाह ॥

शामियाना नया ज़री का है ।
नीचे ताबूत उस परी का है ॥

सेहरा उस पर बंधा है एक ज़रतार ।
जैसे गुलशन की आख़री हो बहार ॥

थी पड़ी उसपे एक चादरे गुल ।
जिससे ख़ुशबू निकलती थी बिल्कुल ॥

ऊद सोज़ आगे आगे रौशन थे ।
मर गये फिर भी लाख जोबन थे ॥

भीड़ ताबूत के थी ऐसी साथ ।
जैसे आये किसी दुल्हन की बरात ॥

सब वज़ीरो शरीफ़ थे हमराह ।
भीड़ थी इस क़दर कि तंग थी राह ॥

साथ थे ख्वेश अक़रबा सारे ।
रो रहे थे ग़रीब बेचारे ॥

पीछे पीछे था सब से सौदागर ।
मुंह परीशाँ, उदास, ख़ाक बसर ॥

आगे आगे जनाज़ा जाता था ।
ग़श उसे हर क़दम पे आता था ॥

हाथ थामे थे अक़रबा सारे ।
ता किसी जा पे सर न दे मारे ॥

हाल इस दर्जा हो रहा था ज़बूं ।
बहता जाता था सर के ज़ख़्म से ख़ूं ॥

सब अमीरो फ़क़ीर रोते थे ।
देख कर राहगीर रोते थे ॥

पीछे सबके फ़िनस में थी मादर ।
कहती जाती थी इस तरह रो कर ॥

तेरी मय्यत पे हो गई मैं निसार ।
कम सुख़न हाय मेरी ग़ैरते दार ॥

दिल पे जो गुज़री कुछ बयान न की ।
कुछ वसियत भी मेरी जान न की ॥

कुछ नहीं माँ की अब ख़बर तुमको ।
किसकी यह खा गई नज़र तुमको ॥

दिल ज़ईफ़ी में मेरा तोड़ गई ।
बेटा इस माँ को किस पे छोड़ गई ॥

ताज़ा पैदा जिगर पे दाग़ हुआ ।
घर मेरा आज बे चिराग़ हुआ ॥

दिल को हाथों से कोई मलता है ।
जी संभाले नहीं संभालता है ॥

ज़हर दे दे कोई मैं खा जाऊं ।
या ज़मीं शक़ हो मैं समा जाऊं ॥

दाग़ तेरा जिगर जलाता है ।
चांद सा मुखड़ा याद आता है ॥

मिट गया लुत्फ़ ज़िन्दगानी का ।
दिल को ग़म है तेरी जवानी का ॥

ब्याह तेरा रचाने पाई न मैं ।
कोई मन्नत बढ़ाने पाई न मैं ॥

तेरी सूरत पे हो गई क़ुरबान ।
चलीं दुनिया से कैसी पुर अरमान ॥

हुईं किस बात पर ख़फ़ा बोलो ।
अम्माँ वारी ज़रा जवाब तो दो ॥

बोलतीं तुम नहीं पुकारे से ।
अब जियूंगी मैं किस सहारे से ॥

क्या क़ज़ा ने जिगर पे दाग़ दिया ।
आज घर मेरा बेचिराग़ किया ॥

निकला माँ बाप का न कुछ अरमान ।
हाय बेटा न तुम चढ़ीं परवान ॥

ऐसी इस माँ से हो गई बेज़ार ।
ली न ख़िदमत भी पड़के कुछ बीमार ॥

न जियूंगी तेरे फ़िराक़ में मैं।
दिल तड़पता हैं आँखें ढूंढती हैं॥

किस मुसीबत में पड़ गई बेटा।
कोख मेरी उजड़ गई बेटा॥

उम्र कटनी थी ऐसे सदमे में।
ठोकरें थीं बदी बुढ़ापे में॥

सुन के इस तरह उसकी माँ के बैन।
और सीने में दिल हुवा बेचैन॥

थी वसियत जो उस परी की याद।
सब के पीछे मैं हो लिया नाशाद॥

गो यह ताक़त न थी कि चलता राह।
ले चला जज्बे इश्क़ पर हमराह॥

पीछे उन सबके जो रवाँ था मैं।
सूरते गर्दे कारवाँ था मैं॥

राहे तड़पता था सूरते बिस्मिल।
बैठ जाता था राह थाम के दिल॥

ज्यों ज्यों करता था जब्त मैं नाला ।
हुवा जाता था दिल तहो बाला ॥

मुर्ग़ बिस्मिल की मेरी सूरत थी ।
याँ गिरा वाँ गिरा यह हालत थी ॥

अलग़रज पहुंचा साथ उनके ववाँ ।
दफ़्न का उसके था मक़ाम जहाँ ॥

क़ब्र खुदती जो वाँ नजर आई ।
लाख रोका पे चश्म भर आई ॥

देख कर यह जो लोग रोने लगे ।
टुकड़े टुकड़े जिगर के होने लगे ॥

ताक़ते जब्ते गिरयह जब न रही ।
दिल से अपने यह मैंने बात कही ॥

कह के क्या मर गई वह जान तुझे ।
कुछ वसीयत का भी है ध्यान तुझे ॥

हो न लिल्लाह बेक़रार इतना ।
जब्त कर नाला हो सके जितना ॥

दिल को समझा के यह गया मैं वहाँ ।
जमा सब उसके अक़रबा थे जहाँ ॥

दिले आफ़त जदह को बहला कर ।
चुपका बैठा मैं एक तरफ़ जा कर ॥

अश्क आँखों से गो न बहते थे ।
लोग पर देख कर यह कहते थे ॥

हाल चेहरे का आज कैसा है ।
ख़ैर तो है, मिज़ाज कैसा है ॥

लाल आँखें हैं तमतमाये हैं गाल ।
वजह क्या है, बयान कीजिये हाल ॥

मुंह पे एक मुर्दनी सी छाई है ।
चेहरे पर छुट रही हवाई है ॥

बोला मैं और कुछ नहीं है बात ।
शब को सोया नहीं मैं सारी रात ॥

इस पे पैदल जो आया मैं मजबूर ।
रंग चेहरे का हो गया काफ़ूर ॥

तर्के आदत भी एक अदावत है ।
रात का जागना क़यामत है ॥

दिल का शक उनके सब निकाल दिया ।
यही कह सुन के उनको टाल दिया ॥

गुल हुआ इतने में सब आते जायं ।
फ़ातेहा पढ़ते जायं, जाते जायं ॥

सुन के यह सब गये वहाँ अहबाब ।
बख़्शा पढ़ पढ़ के फ़ातेहा का सवाब ॥

आलमे तन्हाई में

क़ब्र पर आहोज़ारी

जब कि इस से भी हो गई फ़ुरसत ।
आये जितने थे हो गये रुख़सत ॥

पाई तनहा जो मैं ने यार की क़ब्र ।
दिल को बाक़ी रही न ताक़ते सब्र ॥

था जो उस शमा रुख़ का परवाना ।
दौड़ कर आया मिस्ले दीवाना ॥

गिर पड़ा आके क़ब्र पर एक बार ।
और रोने लगा मैं ज़ारो क़तार ॥

न रहा था जो अख़त्यार में दिल ।
लोटा तुर्बत पे सूरते बिस्मिल ॥

आशिक़ की सख़्त जानी

मर गई थी जो मुझ पे वह गुलफ़ाम ।
जिन्दगी हो गई मुझे भी हराम ॥

देखा आँखों से था जो ऐसा क़हर ।
खा गया मैं भी घर में आकर जहर ॥

दोपहर तक तो क़ै रही जारी ।
बाद उसके ग़शी हुई तारी ॥

तीन दिन तक रही वह बेहोशी ।
हो गई जिससे ख़ुद फ़रामोशी ॥

ऐन ग़फ़लत में फिर यह देखा ख़्वाब।
कि यह कहती है वह बचश्मे अताब॥

सुन तो रे तू ने जहर क्यों खाया।
कुछ वसीयत का भी न पास आया॥

हुये ख़ुद रफ़्ता ऐसे हद से ज्याद।
दो ही दिन में भुला दी मेरी याद॥

दिल से मेरा भुला दिया कहना।
हाँ यही चाहिये था क्या कहना॥

कह के यह जब वह हो गई रूपोश।
खुल गई आँख, आगया मुझे होश॥

जहर का फिर न कुछ असर पाया।
एक तअज्जुब सा मुझको यह आया॥

आशना, दोस्त, सब का था यह बयान।
मुर्दे जी उठे लो ख़ुदा की यह शान॥

हो गया वालदैन को यह यह सुरूर।
बढ़ गया दिल का चैन, चश्म का नूर॥

अक़रबा सुन के हो गये दिलशाद ।
आके देने लगे मुबारक बाद ॥

हासिल इतना था इस कहानी से ।
हम रहे जीते सख़्त जानी से ॥

इश्क़ में हमने यह कमाई की ।
दिल दिया ग़म से आशनाई की ॥

दिनांक Date	उधारकर्ता की संख्या Borrower's No.	दिनांक Date	उधारकर्ता की संख्या Borrower's No.